



جامعة البعث
كلية الآداب والعلوم الإنسانية
قسم اللغة العربية

أثر القرآن في شعر أبي العلاء المعري

أطروحة لنيل درجة الماجستير في النقد القديم (شعر عباسي)

إعداد الطالبة

ريما عبد الكريم رجوب

بإشراف

الدكتورة ليلى رضوان

قدمت هذه الرسالة استكمالاً لمتطلبات نيل درجة الماجستير في الآداب (دراسات أدبية) قسم اللغة العربية من كلية الآداب والعلوم الإنسانية بجامعة البعث .

المشرفة :
الدكتورة : ليلى رضوان

الطالبة :
ريما عبد الكريم رجوب

This thesis is submitted in partial fulfillment of the requirements for the degree of master of arts (literature studies) Department of Arabic faculty of art and humanities – AL – Baath university .

Candidatr :
Dr : Laila Radwan

Student :
Rima Abd Alkareem Rajoub

تصريح :

أصرح بأن هذا البحث (أثر القرآن في شعر أبي العلاء المعري) لم يسبق أن قبل للحصول على أية شهادة ولا هو مقدم حالياً للحصول على شهادة أخرى .

الطالبة :

ريما عبد الكريم رجوب

I here by declare that this work (Quaran effect in ALmaarri Poems) has not been accepted for any degree nor is it being submitted concurrently for any other degree .

Student :

Rima Abd – AL kareem Rajoub

شهادة من الدكتوراة :

نشهد بأن العمل الموصوف في هذه الرسالة هو نتيجة بحث قامت به الطالبة ريما عبد الكريم رجوب تحت إشراف الدكتورة ليلي رضوان في قسم اللغة العربية من كلية الآداب والعلوم الإنسانية في جامعة البعث وأي رجوع إلى بحث آخر في هذا الموضوع موثق في النص .

المشرفة :
د . ليلي رضوان

الطالبة :
ريما عبد الكريم رجوب

It is here by certificate that the work describe in this thesis is the result of the anther's own investigation under the supervision of Dr : (laila Radwan) a teacher in the department of Arabic , faculty of arts and humanities AL – bath university , and that all in formation Taken from other research has been a ck now ledged in the text.

Candidate
Dr : laila Bad wan

Student
Rima Abd – Al Kareem Rajoub

نوقشت هذه الرسالة وأجيزت بتاريخ :

م / /

الدكتورة :

الأستاذ الدكتور :

الدكتور :

عضو :

عضو :

عضو :

المشرف : د. ليلى رضوان

إلى أمي

* إلى نبض قلبي الذي يدق بالحنان والمحبة إلى والدي العزيز الذي أرشدني إلى الخير وصوّب قراراتي وأزرنني في مواجهة المحن والصعوبات .

إلى والدي الغالي

* إلى نور عيني التي أبصر فيها الحياة وأتفهم حقائقها ، إلى من وقفت بجانبني وتابعتني بالدعاء والبركة .

إلى أمي الحبيبة

* إلى النجوم الساطعة التي أضاءت دربي بابتسامتها ...
إلى إخوتي وأخواتي الأحباء

شكر ورفاق

في نهاية هذه الرحلة لا يسعني سوى تقديم فائق الشكر لكلّ من مدّ يد العون والمساعدة لي في إنجاز هذا البحث وأخص بالشكر :

- الدكتورة العزيزة (ليلي رضوان) التي وقفت إلى جانبي وساعدتني في ذكر الأفكار وتثبيتها وأمدتني بجملة من المصادر والمراجع وشرفنتني بقبول الإشراف على رسالتي ومضت معي في جوانب البحث المتطرفة تنصحتني وتوجه الملاحظات والآراء لي .

- الأساتذة أعضاء لجنة المناقشة والحكم الذين تفضلوا بقبول النظر في هذه الرسالة وسوف تسهم ملاحظاتهم في تقويم هذا البحث وإقالة عثراته .

- وكذلك أقدم الشكر للعاملات في كلية الآداب – مكتبة الكلية – لما وفرنه لي من ذخائر تلك المكتبة وأخص بالذكر أمينة المكتبة الأنسة : هدى فياض .

مخطط البحث

•
•

* : •

-
-
-
-

- :
-
-
-
-
-
-
-
-

: •
-
-
-
-

-
 -
 -
 : ●
 *
 (- - -) -
 -
 -
 -
 *
 -
 -
 -
 -
 () ●
 : : ●
 ●
 ●

مقدمة :

" "

()

. ()

.. :

.. :

":

() . "

"

() . "

أثر القرآن الكريم في تشكل التراث :

: []

"

() . "

:

"

() . "

() . "

"

...

()

()

()

()

()

·
() .

..

"

() . "

.

"

:

- "

- "

() . "

" :

"

:

- "

.

- "

.

- "

. - / - - - - - . - - - - - ()
- - - - - ()
- - - - - ()

() . "

- "

:

() . "

"

. - - - - - ()
 : - - - - - ()

الفصل الأول

الفصل الأول

أثر القرآن في معاني المعري وموضوعاته وأفكاره

مفهوم المعنى:

() "

.()"

.

:

"

()

:()

.()"

]

:

" : / /

.()"

"

()

.()"

. - / - -
:
- /

. ()
./ / ()
()
. ()

)

/ /

:

(

" ;

.

:

. () " ...

"

. () "

. () "

"

/ /

/ /

() / /

" ;

. () " ...

.

. / / : / - /

()

/ / ()

/ / ()

. : - / ()

. : / ()

....

:

" .

. ()"

()

()

:

()

:

()

. ()

.

. ()

: ()

/ / ()

. ()

فهم المعري للمعاني القرآنية:

()

:

()

"

...

()" ...

()

() ()

...

/ / ()

()

()

() ()

":

."()

":

()

()

()

."()

() ()

":

()

."()

()

" "

..

)

(..

- - - -
- - -
()

()
()

()
()
()
:
() ()

" :

()"

:

()

:

()

" : ()

()"

" : ()

卷

》 :

()

()"

:

()

()

()

()

() - () ()

()

“：” “ ” ()

“ () ”

()

“：”

“ () ”

：

：

“ () ”

”

. ()
 . ()
 . ()

)
" ()

..

..()

.....

المعاني القرآنية:

)

.(...

:

- ()
- ()

أولاً.. الإيمان بالله تعالى وتوحيده:

:" ()"

: *

*

.. ()

()

()

:

"

:" ()"

:

. ()
/ - - - - -
/ - - - - -
(- -) () ()
- - - - -
- - - - - ()
- - - - - ()

()

...

"

()"

:

()

:

()

:

()

| | | | | | | |
|-----|---|---|---|---|---|-----|
| ... | : | - | : | - | - | () |
| | | | | . | - | () |
| | : | | - | - | - | () |
| | | | | . | - | () |
| | | | | | : | |
| | | | | . | - | () |

() () () ()
() () () ()

:
ثانياً.. الإيمان بالرسول والكتب السماوية:

"

()"

)) :

() - -
() - -
() - -
() - -
() - -
() - -
() - -
() - -
() - -
() - -

: *

() / / / /
() / / / / - - / /
() - - / /

()

:

()

:

()

:

()

:

(())

:

| | | | |
|---|---|---|-----|
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |

)

.()

" ()

.()"

:

()

()

.()

) :

:

()

()

()

(

)

.()

()

- -
.[() -()

-()

.() -() ()

- () ()

[-()]:

.() -() ()

-() ()

-() ()

()

()

()

:

()

:

...

()

(

)

()

()

...

)

:

...

()

.()

)

()

()

:

()

:

)

.()

...

...

- / / : + - / - / - / - / - - ()

() ()

. / / - / / - ()

.() -() ()

.() -() ()

. - / / - / / - ()

.() -() ()

:

()

()

) :

. ()

:

()

() ()

()

| | | | |
|-------|-------|---|-----|
| . | - | - | () |
| | - | - | () |
| . () | - () | | () |
| . | - | - | () |

() :

)

(

:

()

:

ثالثاً.. الإيمان بعالم الغيب:

()

.

. - - ()

. - - ()

⌋ :

"

() ⌋ ...

()"

"

:

:

()"

() ⌋

⌋

() ...

:

()

)

(

:

()

()

:

() ⌋

*

⌋

.() - () ()

- () ()

. () - () ()

.(/) - (/) ()

.(/)

-(/)

]

*

.(/)

. - - ()

. - - ()

- / - - ()

.(-) - () ()

"

.
 :
 :
 ()"
 * * :
 ()
 : ()
 ()

"

:
 () *
 ()"
 () :
 ()
 () * * :
 :
 ()

| | | | |
|---|---------|--------|---------|
| . | - | - | () |
| . | (- -) | -() | () |
| / | - | / | - - () |
| . | - | - | () |
| . | (-) | -() | () |
| . | - | - | () |
| . | () | -() | () |
| . | - / / - | - | - () |
| . | () | -() - | () |
| . | - | - | () |

() :

) ()

(

. () ﴿ : ﴿

()

:

(()) ﴿

() ﴿ : ﴿

: ()

()

. ()

:

رابعاً.. الإيمان باليوم الآخر:

..﴾ :

. () ﴿...

| | | | |
|---------------|-------|---|-----|
| . | - | - | () |
| . () | - () | | () |
| - () | - () | | () |
| - / / - / / - | | | () |
| - / / - / / - | | | () |
| . () | - () | | () |

”

”

() ()

”

:

()

:

()

:

()

()

()

()

()

. () () - () () - () () : ()
 . - - ()
 . - - ()
 . - - ()
 . - / - / - / - - ()
 . - / - - ()
 . - / - - ()
 . - - ()

() ()

()

()

()

()

.

...

.

:

()

. ()

» :

:

: " "

()

»

. () " :

./ / - -/ / - - ()

- / - / - - ()

. - - ()

. - - ()

. - - ()

. - - ()

. () () ()

. () - () ()

() - - - / - - - ()

:

() :

. ()) :
() *) :

() :
()) :

() () () ()

... ()

()

. - - ()
.() () ()
.(-) -() ()
. - - ()
.() -() ()
. - - ()
./ / - - ()
. - - ()
. - - ()
/ - / - / - / - / - / - - ()
. - / - / - /
. -() - - ()

()

:

: -

:

: -

: -

():

:

()"

...

()

:

" :

()"

- ()

() - () ()

- ()

: ﴿﴾ :

()

: ﴿﴾ :

": :

()

:

: ﴿﴾ :

()

:

..

"

..

()

..

()

"

"

()

- : - / - - - - - ()

/ /

-

- / - - - - - ()

: - / /

: . / - - - - - ()

/ / -

-

. / / / - - - - - ()

.

-

.

-

() :

() :

() :

()

() :

| | | | |
|------|------|-----|---------|
| . | - | - | () |
| .() | -() | | () |
| . | - | - | () |
| . | - / | - / | - - () |
| . | - | - | () |

()

:

...

:

سادساً.. صفات المؤمنين:

()

:

()

()

()

()

()

()

()

| | | | |
|---|---|---|-----|
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |

()

()

" :

:

() " ()

:

()

)

" :

() "

:

()

()

:

()

)

:

() ((

))

. - / - / - / - / - / - / - - ()

()

() - () ()

() - () ()

() - / - - ()

() ج ٣ - ص ١١٥٤

()

() - () ()

: - : - - - - - - - ()

//

() "

" : 3

:

()

()

:

()

)

:

()

)

()

"

() "

/ /

- - ()

. - - ()

. () - () ()

. () - - ()

. () - () ()

- - - - ()

...
()

:

()

« : »
() « () »

:

سابعاً.. صفات الكافرين والمنافقين:

)

» :

() «

[- -] () - () ()
- - ()
() - () ()
()
() () ()
()

⌋ :

() ⌋

()

:

"

() " ...

()

:

()

() ⌋

⌋ :

:
()

() ⌋

⌋ :

| | | |
|------|---------|-----|
| .() | - () | () |
| . | - - | () |
| . | - - | () |
| . | - - | () |
| () | - () - | () |
| .() | - () | () |
|] | - - : | () |

[/ /

⌋

⌋

/ /

()

()

() ...

ثامناً.. العبادات:

:

:))

((. ()

() « ...

»:

()
 ()
 ()
 /] - / [...
 ()
 () () ()

» :

. () «....

() «....

» :

:

: *

» :

() «

()

:

()

"

"

:

:

()

"

» :

() «

| | | |
|---------|------|-------|
| . () | () | () |
| . () : | () | () |
| . (-) | () | () |
| . | - | - () |
| . | - | - () |
| . () | -() | () |

()

:

()

:

()

:

()

:

:

*

:

"

()"

:

()

-()-

()

-/ / - / -

()

- / / - / / -

()

. - -

()

. / - / - - - -

()

. - -

()

.

" :

()"

:

()

:

()

:

()

"

()"

| | | | | |
|---|--|---|---|-----|
| - | | | | () |
| . | | - | | () |
| . | | - | - | () |
| . | | - | - | () |
| - | | - | | () |

:

()

:

: *

()

:

:

: *

()

:

:

()

:

"

.

[

]

]

(). [...

| | | | |
|---|---|---|-----|
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |

:

()

:

()

()

"

":

:

()

"

()"

()

...

| | | | |
|-------------|-----------|-------------|-----|
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| - | - | | () |
| - / / / / - | / / / / - | - / / / / : | () |
| / | / | / | : |

:
: () []
()

() () :
" :
()"
:
()

() () :
() :
() () :
() ()"
:
()

- ()
- - ()
- () () ()
- ()
- - ()
- () - () ()
- () - () ()
- ()
- : - - ()

()

:

:

" "

()

:

()

] ()

]:

:

[

()

:

| | | | |
|------|---|-----|-----|
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| .() | - | () | () |
| . | - | - | () |

()

:" " "

.()"

. :

()" " "

. () () :

. ()" :

:

()

. () ()

()

:

()

. - / / / / - ()
.() - - ()
:

- - -
.() -() ()
.() -() ()

. () - - () ()
- - - ()
:

. () () :

. / /

. - / / / / - ()

() :

() :

() :

() :

()

/ / - - ()
/ / - - ()
- - / - - ()
. - - ()

() " ...

"

() "

" ;

()

"

()

...

"

"

...

)

() (...

)

()

(

...

| | | | | | | |
|---|---|----|-----|---|---|-----|
| . | - | /- | - | - | - | () |
| | | | / / | - | - | () |
| . | / | /- | | - | - | () |

"

"

...

()

:

"

.

()"

"

()"

()

:

:

"

()"

| | | | |
|---|---|---|-----|
| . | - | - | () |
| / | - | - | () |
| - | - | - | () |

"

:

:

:

()

:



.()<



:

:

:

:

:

:

.()"

:



.()<

...

- () ()

.(- () ()

- - -] ()

.(- () ()

الخاتمة:

.

()

()

.

...

١٤٣٥

.....

...

...

...

وأخيراً لا بدّ من القول:

...

.

الفصل الثاني

الفصل الثاني

اللغة

)

...

...

((...⁽

))...

" "

...

((...⁽

/ - - - - - ()

- - - - - ()

)):

.('((

))

.('((

('((

)):

(')

()

"

"

...

"

"

.....

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|-----|
| | + | - | - | - | - | - | - | - | () |
| . | - | - | - | - | - | - | - | - | () |
| . | - | - | - | - | - | - | - | - | () |
| : | : | : | - | - | - | - | - | - | () |
| : | - | - | - | - | - | - | - | - | () |

)

(

)

...

(

)

(

)

(

)

(

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | (|
| - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | (|
| - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | (|
| - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | (|
| - | - | - | - | - | - | - | - | - | - | (|

.^()((.
())

()

.^()...

.^()() :

...

.

)) :

.^()((.

...

- / - - - -

- - ()
- - ()
: - - -
.() - () ()
- - ()

.()⟨ ⟩:

) ...

()⟨ ⟩:

.()((...

⟩:

()⟨

...⟩:

()⟨

() ())

.()((

" "))

()((())

.()

.() - () ()

() - () ()

- () ()

. () - () ()

. () - () ()

- () ()

. () - / () - / () - ()

- / - - - - - ()

∴

» :

. () (

())

()) :

()

()

()

. () ((...

...

:

() (

)

)) : (

)

. () ((

() (

) :

...

)) :

...

| | | |
|-------|-------|-----|
| . () | - () | () |
| . () | - () | () |
| . () | - () | () |
| . () | - () | () |
| . | - | () |
| . () | - () | () |
| . | - | () |
| . | - | : |
| . () | - () | () |

. () ((

:

))

. () ((

()

.

))

.

. () ((

.

.....

- - - -

- - ()

. - - - - -

: ()

- - - - -

. ()

. ()

))

. () ((...

...

أسماء القرآن في شعر المعري :

()

...

....

:))

.

:

. () < > : () < > :

.... - - - - - :

()

:

()

. () - () ()
 . () - () ()
 . - () - () ()
 . - - () ()

. () () :

()

:

()

:

() ()

. ()

" " "

) : " "

. ()

:

()

- " " " "

: -

| | | |
|-------|-------|-----|
| . () | - () | () |
| . | - - | () |
| . () | - () | () |
| . | - - / | () |
| . () | - () | () |
| | - - | () |

() ()

" " " "

: " " "

()

" " " "

()

:

()

- -

.

...

:

)

. () ((

()

/()

. () - () ()
() : - - ()
: ()

- - . - - ()
- - . ()

:

...

... - - - - - - :

 ... - - - - - - :

" " .

:

()

() () :

) :

 ()

() (

| | | | |
|-----|---|---|-----|
| | - | - | |
| () | - | - | () |
| () | - | - | () |
| () | - | - | () |

 () - - - ()

)

. ((

((

) :

((

)

:

(

()

...

" "

:

(

((

) :

| | | | | | | |
|---|-----|---|-----|-------|---|-----|
| . | : | - | - | <hr/> | - | () |
| . | () | - | () | | - | () |
| - | | - | | | - | () |
| | | - | - | | - | () |
| . | | - | - | | - | () |
| . | () | - | () | | - | () |

:

()

() (())

()

...

- / - - - - - - - () ()

- - () . - - () . - - ()

- - () . - - () - - ()

- - - () . - - () . - - ()

- - () . - - - () . - - ()

- - () . - - () . - + - ()

- - () . - - () . - - ()

- - () - - () . - - ()

. / () . / () . / () . - - ()

/ () . / () . / () . / () . / ()

/ () . / () . / () . / () . / ()

. / () . / () . / () . / ()

()" " ()" "
- : ... - - - - - - -
() - - " "
()((:))
" "
...

" "

)

.()((

. - - - - - - - ()
- - - - - - - ()
- - - - - - - ()
.() - - - - - ()
^

:

()

:

()

:

()

:

()

:

()

:

()

" " .

. ()<

> :

- -

:

. ()<

>

))

| | | | |
|-------|-------|---|-------|
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| . () | - () | | () |
| . () | - () | | (^) |

.()((

() (... - -) :
)
.()((() () () () ()

()
. ()
()

> :

> : ()<
. ()<

): ()
.()((

] " " : [()
() ()

- / - - - - - ()
/ () - () : : - - : ()
. () - () : / () () :
. () - () ()
. () - () ()
- - ()

:
.(())((...

)

...

(-

" "
.(())

):

()

.()

()

:

: " "

() - (- -) - () ()
 () - - - - ()
 λξ

. () () : ()
:

()

:

() : ()

-

)

-

. () (

"

- ()

"

. () -

" "

. () () :

. () - () ()

. - - ()

. () - - ()

. : - - ()

. () - () ()

)

:

:

.^()((

-

:

()

....

)

.

...

.^()((...

-

-

:

:

]

^()[...

-

-

-

-

"

"

. ()

-

-

-

-

()

.

-

-

-

-

()

.

-

-

-

.

()

.

-

-

-

-

-

-

.

()

(... ())

()

:

.

)

. ()

.

...

:

:

.

() ()
()

: ()

()

()

)

. (-) - () ()
- - - - - ()
- - - - - ()

.()((

:
()

...

" "

...

()

:

)

.()((

.()((
)

):

):

.()((

:

()

- - - - - : / () - () ()
 - - - - - : . () - () ()
 . () - / - - - - (e)
 - - - - - ()

" " []

[]

.

: : []

()

...

...

:))

⤴

⤵ :

:

. () ⤴

⤵

...

...

:

" "

- - - - -

()

.....

...

" "

" "

:

»:

" "

. ()

()

»:

" "

. ()

)

. ()

»:

.

-

-

.

:

()

"

"

.

. () - () ()

. () - () (Y)

. - - ()

. () - () ()

. - - - - ()

)):

.^()((

)

...

.^()((...

:

()

() () :

...

:)

.^()((...

:

| | | | | | | | | | |
|---|-----|---|-----|---|-----|---|-----|---|-----|
| . | : | . | - | - | - | - | - | - | () |
| . | - | - | - | - | - | - | - | - | () |
| . | - | - | - | - | - | - | - | - | () |
| . | () | - | () | - | () | - | () | - | () |
| . | - | - | - | - | - | - | - | - | () |

()

» :

:

· «

)

· () ((

:

:

()

:

«

» :

() («

) :

...

" "

:

()

()

... - :

...

...

| | | | | | | |
|---|---|---|-----|-------|-----|-----|
| · | - | - | - | - | - | () |
| · | | - | | | - | () |
| · | | - | - | - | - | () |
| · | | | () | - () | | () |
| · | | | | | - - | () |

...

. () "

)

:

:

"

() . " ...

"

() . " ...

...

"

() . "

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|-----|
| . | - | - | - | - | - | - | () |
| . | - | - | - | - | - | - | () |
| . | - | - | - | - | - | - | () |
| . | - | - | - | - | - | - | () |

.

...

...

()

" "

- -
" "

:

()

:

() . ()

)

) :

(

()

- - - -

- - - ()
- - - ()
.() - () ()

·
...

...

" "

()

()

[...]

":

() "

:

()

()

:

()

()

...

· - - - - - / - - - - - ()
 . - - - - - - - - - - ()
 . - - - - - - - - - - ()
 . () () ()

" " " .
 :
 () "

()
 ()

:
 () ()
 () ...

()

() (*) :
 ()

. - - - : - - - - - ()
 . - - - - - ()
 . () - () ()
 . - ... - / - - - ()
 . - - - - - : ()
 . () - () ()

() ()
 () : ()
 ... - - " "
 :
 ()
 : () () ()
 () .
)
 : " "
 : () ()
 . () ()
) :
 . () ()
 :

()

*

()
 () - () ()
 ()
 ()
 ()
 : () - () ()
 :
 ()
 ()

..

" " " "

...

"

() " ...

| | | | | | | | | |
|---|---|---|-----|-----|---|---|---|------|
| | - | - | () | | - | - | : | ()* |
| | | | () | | | - | - | () |
| | | - | - | () | | | - | - |
| | | | () | | - | + | - | () |
| - | | | () | | | | - | - |
| | | | () | | | - | | () |
| - | | | () | | - | | - | () |
| - | | | () | | - | - | - | () |
| | | | () | | - | - | - | () |
| | | | () | | - | - | - | () |
| - | | | () | | | | - | - |
| | | | () | | | | - | - |
| | | | () | | | | - | - |
| | | | () | | | | - | - |

()

- " : -

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|-----|-----|-----|---|---|-----|-----|-----|
| | - | - | () | | | - | - | () | | |
| | | - | - | () | | - | - | () | | |
| | | | - | - | () | | - | - | () | |
| - | | - | - | - | () | | - | - | () | |
| | | - | - | - | () | - | | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | - | | - | - | () |
| - | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | | - | - | () | - | | - | - | () |
| | | | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | + | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| - | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | - | | - | - | () |
| | | | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | | - | - | () | | - | - | - | () |
| | | - | - | - | () | | - | - | - | () |

:

”

() ”

”

() ”

:

”

() ”

...

”

() ” ...

” ”

” :

() ”

()

()

()

()

()

...)

"

":

"

...

() "

() " "

() .

" "

() ()

* () :

() ()

* () " "

:

... "

"

... "

"

":

" "

" "

()

() "

| | | | | | | | | | |
|---|-------|---|-----|---|---|---|---|---|-----|
| - | . | - | - | - | - | - | - | . | () |
| - | - | - | - | - | - | - | - | . | () |
| . | - | - | - | - | - | - | - | . | () |
| . | (-) | - | () | | | | | . | () |
| . | (-) | - | () | | | | | . | () |
| . | - | - | - | - | - | - | - | . | () |

"

"

()

() ...

"

() . "

()

:

"

"

() (*)

) :

() (...

()

...

:

() ()

"

() . " ...

() () :

"

- - - - - ()

- - - - - ()

(-) - () ()

() - () ()

() - () ()

- - - ()

() - () ()

:
() "

.
...

...

اللفظة المعبرة من خلال جرسها :

...

() ...

"

() " ...

"

() "

()
()
()
()

:

()

(-)

...

()

() () :

:

() ()

:

()

()

:

...

...

"

. ()
. ()

-
-

| | | | |
|---|-----|------|-----|
| . | - | - | () |
| + | () | -() | () |
| + | () | -() | () |
| . | - | - | () |

() " ...

...

.

...

...

()

...

:

() " ...

...

"

"

... : ... - - - - - ()

... - - - - - ()

... - - - - - ()

”

() ”

...

...

...

”

...

() ” ...

...

”

() ” ..

| | | | |
|---|---|---|-------|
| . | - | - | . () |
| . | - | - | . () |
| . | - | - | . () |

...

"

"

.

الفصل الثالث

الفصل الثالث

الأسلوب

() .

()

() ...

"

" () .

" ()

"

()
()
()

”

()”

. () ...

.

.

...

.

” : ”

”

. ()”

”

. - - - - - ()
. - - - - - ()
. - - - - - ()

.()"

"

. ()"

"

"

" :

. ()"

:

:

- -

) :
()

...

.....

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|-------|-------|-------|
| - | / | - | - | - | - | - | - | . () |
| - | | - | - | - | - | - | - | . () |
| | | - | - | - | - | - | - | () |
| | | | | | | - | - | : |
| | | | | | | . () | - () | () |

·
: " " () " - - "

· · · · ·
" "

· · ·

· " ()

· - - - - - - - - - - ()
· ()

》:

.()《

”:

:

.()”

...

.()《

》:

”

()”

:

.()《

》

:

”

:

.()”

》

.()《

| | | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|---|
| .(| - |) | - | (|) | (|
| - | - | - | - | - | - | (|
| .(|) | - | (|) | - | (|
| - | - | - | - | - | - | (|
| .(|) | - | (|) | - | (|
| - | - | - | - | - | - | (|
| .(|) | - | (|) | - | (|

»:

. ()

()

:

. ()

»

. ()

" : ()

()

()"

:

. () - () ()

. (-) - () ()

- : - - / - - - ()

- - - - - ()

() ()

"

()"

) :

() (

"

()"

:

)

() (

| | | | |
|---|---------|-------|-----|
| . | () | - () | () |
| . | - | | () |
| . | (...) | - () | () |
| . | - | | () |
| . | () | - () | () |
| . | - | | * |

*

:

)

...

. () < ...

.

"

. ()" "

...

"

. ()" ...

| | | |
|-------|-------|-------|
| . () | - () | () |
| - | - | . () |
| - | - | . () |

» :

. () (

:

" () (

)

()"

» :

" ")) :

() (

. () ((

)

...

()

. () ((

. () ((

) :

| | | |
|-------|-------|-----|
| . () | - () | () |
| . () | - () | () |
| . | - | () |
| . () | - () | () |
| - | - | () |
| . | - | () |
| . | - | () |

)) " "

...

))
. () ((

:))

...

()

. () ((...

:

: - "

)

):

() ((

. () ((

()

()

()

()

()

)):

. () ((

))

. () ((.

:

()

() .

()

() (

) :

...

- - - - -
- - - - -

| | | |
|------|-------|-------|
| - | . | () |
| - | . | () |
| . | - | - () |
| - | . | () |
| .() | - () | () |

() :

. () () : ())

. () (

()

...

)

() (

() :

. () () :

| | | | | |
|---|-----|-------|---|-----|
| . | - | - | : | () |
| . | () | - () | | () |
| . | () | - | - | () |
| . | - | - | - | () |
| . | - | - | : | () |
| . | () | - () | | () |

()

...

:

()

:

"

()

) :

...

()

()

- - : ()

() - () ()

- - : ()

()

- - ()

- - ()

- - ()

- - ()

- - ()

- + - ()

- - ()

- - : ()

- - ()

- - ()

- + - ()

- - ()

- - ()

- - ()

- - ()

- - ()

- - ()

- - ()

- - ()

- : ()

- - ()

- - ()

- - ()

- - ()

()

:

. () <

> :

)

. () ((...

:

()

:

:

| | | | | |
|---|-----|-------|---|-----|
| . | - | - | : | () |
| . | () | - () | | () |
| . | - | | . | () |
| . | - | - | : | () |

. () () :

...

: " " () ()

()

()

)

(

() () :

. () () :

...

- -

:

) : : - "

. () (

| | | | |
|---|-----|-------|-----|
| . | () | - () | () |
| . | - | - | / |
| . | () | - () | : |
| . | () | - () | () |
| . | () | - () | () |
| - | / | - | - |
| . | | | : |

)):
.(('

)) - -

.(('

:

...

() :
: :
.(('):

))
.(('

.() - () ()
- - - - - ()
- - - - - ()
.() - () ()
- - - - - ()

()

() :

:
:
() () :

...

)

. () ((

. () ((: - ")

. () (()

. - - : ()
. () - () ()
. - () - ()
. - - ()
. - - - - ()

:
 ()
 :
 :
 :
) :
 :
 . ()
 . () (. :

...

:
 ()
 :
 . ()
)

| | | | |
|-------|-------|---|-----|
| . | - | - | () |
| . () | - () | | () |
| | - | | () |
| - | - | : | () |
| . () | - () | | () |

-

:

)

. () ((

.

:

()

:

. () ((

)

...

...

...

)

:

:

...

-

. - - - . ()
 . - - : ()
 . () - () ()

: •

)

:

:

. () ((

() ((

" "

)

. () ((

)

...

:

)

. () ((

:

.

...

. () ((

. () ()

- - () ()

. () - () ()

- - - - - () ()

- - - - - () ()

()

))

. () ((

:

:

*

))

. () ((...

. () (

) :

....

))

:

. () ((...

- - - - -

. ()

()

. ()

()

()

. () - - - - -

:

()((

)) :

. () (

"

"

)

)

) :

. () (

) :

. () (

)

:

()

()((

)

()((

...

() - ()

* () - ()

. () - () ()

. () - () ()

. () - () ()

. () - () ()

. () - () (*)

. () - () *

. () - () ()

. () - () ()

()((...

) :

()((

) :

:

:

()((.

)

(())

"

"

()

()((

) :

:

()

...

-

(())

()

()

()

()

()

()

()

()

() :

...

....

:

))

.^()((...

. - - ()
- . ()

)

. () ((

) ()

. () ((

:

()

" "

)

:

" "

. () ((

)

:

. () ((

...

)

-

| | | | |
|-------|-------|---|-----|
| . | - | . | () |
| - | - | . | () |
| . | - | - | () |
| . () | - () | | () |
| - | - | | () |

. () ((

...

....

()

)

. () ((

)

- - - - - . ()
- - - - - . ()

" " () ((:
 . () ())
)

. () (:

() :

() :

| | | | |
|-----|------|------|------|
| . | - | - | () |
| () | -() | /() | -() |
| | | - | - |
| | | - | - |
| | | : | () |

...

:

()

:

. () ()

()

...

:

()

:

() :

:

| | | | |
|-------|-------|---|-----|
| - | - | : | () |
| . () | - () | | () |
| - | - | : | () |

: " " ()

. () :

:

..

:

:)

.

. () (

))

...

. () ((

()

()

. (-) - () ()

()

(٢) سقط الزند : ق ٤٣ - ب ٣٩ - ص ٩٩٣ / ق ١٠٢ - ب ١٢ - ص ١٩٩٧ - ١٩٩٨ / ق ٤٣ - ب ٤١ - ص ٩٩٤ .

()

. () ((

...

:

- "

- "))

- "

- "

. () ((

"

"

))

"

"

. () ((...

.

:

))

" :

:

. - - - - -

_____ ()
- - - - - ()
- - - - - ()

()

:

.^()((

...

...

. - /

- ()
١٤٣

. - - ()
) - ()

مقتطفات من كتاب المعري (زجر النابح)

:

*

() () () - -
() () () () ()
()

) -
() . (" "
" " ()
...

:

*

(())

OR

()

" " . ()

- - / - - - ()
- - - [] - - ()
- - - ()
: - - - ()
- - - ()
- - - ()
- - - ()
- - - ()

()

...

()

:

...

)): ((...))

: ()

((

()

.

()

.

.

:

*

()

..

:

()

()

-

-

.



) () () ()
 () () () () ()
 . () () ()

...

..

()

()

()

:

:

[]

[]

) :] () (

) :

()

...

() (

()

()

()

()

:

"

"

[...]

:()

()

()

:

()

:

| | | | |
|------|------|-----|-----|
| - | - | () | |
| .() | -() | () | |
| .() | -() | () | |
| . | - | - | () |
| | - | - | () |
| | - | - | () |
| | - | - | () |
| | - | - | () |
| | : | | () |

: ﴿ ()
 ()
 : ﴿ ()
 " " : ﴿ ()
 " " : (...) : ﴿ () (...)
 () ()
 : :
 : ﴿ () ﴿

(١) سورة ص (٣٨) - الآية (٢٤)

- : ()
 / /
 . (-) - () ()
 . () - () ()
 - - - (٥)
 - - ()
 . () - () (٧)

$\rangle:$
 $(\langle$
 $($

$:$
 $:$
 $\rangle: (\langle$
 $(\langle$
 $:$
 $($
 $:$

$($
 $:$
 $:$
 $:$
 $\rangle (\langle$
 $\rangle:$

| | | | |
|-----|-----|-----|-----|
| $($ | $-$ | $($ | $($ |
| $.$ | $-$ | $-$ | $($ |
| $.$ | $-$ | $-$ | $($ |
| $($ | $-$ | $($ | $($ |
| $.$ | $($ | $-$ | $($ |
| | | $-$ | $($ |
| | | $-$ | $-$ |
| $($ | $-$ | $($ | $($ |

: :

()

:

()

:

()

: ()

()

()

:

()

()

. () (

) :

(

) :

(

) :

:

-

-

-

-

-

-

()

:

-

-

-

()

-

-

()

.

-

(£)

-

-

(°)

:

()

:

()

. ()

- ()

()

. () () :

. ()

()

() :

:

-

":

- "

() :

. () (

) :

) : ()

. () (

: ()

:

()

()

| | | |
|-------|-------|-----|
| . () | - () | () |
| - | - | () |
| . | - | () |
| . () | - () | () |
| . () | - () | () |
| - | - | () |
| . | - | () |

:

):

(

.()⟨ ⟩: .()

.()

()

()

:

:

[]

.()⟨ ⟩:

:

()⟨ ⟩:

:

):

! : .(

:

()

.() - () ()

. - - ()

. - - ()

. () - () ()

. () - () ()

:

.

)

.()⟨

⟩

()⟨

:

()⟨

⟩

:

()⟨

⟩

:()

()

()

:

):

(

):

(

⟩:

()⟨

⟩:

⟩:

()⟨

.()⟨

.()

| | | | |
|------|-------|-----|-----|
| .() | -() | () | |
| .() | / () | () | |
| .() | -() | () | |
| .() | -() | () | |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| .() | -() | () | |
| .() | -() | () | |
| .() | -() | () | |
| . | - | - | () |

()

()!

:

()<

>:

>:

()<

;()

:

[:]"

":

;()

[]

()

()

:

(()):

| | | |
|-------|-------|-----|
| | - - | () |
| .() | -() | () |
| .() | -() | () |
| / - - | - - | () |
| | - - - | () |
| | - - - | () |

: ()

:

)

()

" ... " []

: ()

()

()

:

) :

[]

()

[]

() []

]]

[]

()

: ()

()

. () - ()

()

()

()

. (-) - ()

()

()

()

()

()

()

:

):

):

)

)

()

()

:

()

:

)

):

()

()

()

| | | | |
|------|------|---|-----|
| . | - | - | () |
| .() | -() | | () |
| .() | -() | | () |
| . | - | - | () |
| . | - | - | () |
| .() | -() | | () |
| | - | | () |
| . | - | - | () |

() () :

() () :

[] .

[] [] .

()

()

()

:

) .

()

(

:

() (

:

)

*

()

()

:

:

[] .

()

:

() - () ()

() - () ()

- - ()

- - ()

- + () - () ()

- - ()

- - ()

()

*

()

() () :

() ()

() ()

:

() () :

() ()

()

() ()

:

() :

()

()

()

| | | | | | | | |
|---|-------|---|-----|---|---|---|-----|
| . | / | - | / | - | - | - | () |
| . | () | - | () | | | | () |
| . | - | - | - | | | | () |
| . | () | - | () | - | | | () |
| . | (-) | - | () | | | | () |
| . | () | - | () | | | | () |
| . | () | - | () | | | | () |
| . | () | - | () | | | | () |
| . | () | - | () | | | | () |
| . | () | - | () | | | | () |

) :

) : (

) : (

(

[]

(

(

[...]

[...] [

(

() - () ()

- () ()

- / : / - - ()

[] / () () :

[] / ()

... - ()

()

()

:

"

"

)):

((

)):

((

()

:

)>:

()<

>

()<

()

()

()

:

()<

>:

()<

>:

()

- - - / - -

| | | | | |
|---|-----|------|-----|-----|
| . | - | - | () | |
| - | | - | () | |
| . | () | -() | () | |
| . | () | -() | () | |
| . | - | - | () | |
| . | | - | - | () |
| . | () | -() | () | |
| . | () | -() | () | |
| . | - | - | () | |

()

()

:

:

"

"

)):

((

):

()

()

):

:

()

:

()

()

):

:

(()):

()

()

()

| | | | |
|-----|-------|-------|-----|
| . | - | - | () |
| . | () | - () | () |
| () | - () | | () |
| /- | - | - | () |
| | | | () |
| . | () | - () | () |
| . | ... | - | () |
| . | | - | () |

:

):

()

):

":

()

()
)):
()

"

((

()

()

()

:

()

):

:

:

):

:

:

()

| | | |
|-------|-------|-----|
| . () | - () | () |
| . () | - () | () |
| | : | () |
| | : | () |
| . | - | () |
| . | - | () |
| . () | - () | () |
| . () | - () | () |

()

:

()

:

()

()

:

:

()

:

:

()

:

()

- : - : - - - - - ()

. [] : () : ()

- - - - - ()

. - / - / - - - - - ()

: - / - - - - - : (e)

/ - - ()

()

()

()

:

:

()

:

:

:

:

() ()

-

:

()

)

()

()

()

:

:

()

:

- - ()

- - ()

() / () / () ()

() - () ()

- - ()

. - - ()

. - - ()

:

) :

()

"

"

:

()

:

()

()

(-) - () ()

()

(-) ()

/ -

:

: .

:

() ()

" "

:

:

() () () ()

() () .

:

()

:

()

:

:

() []

| | | |
|-------|-------|-----|
| . () | - () | () |
| () | - () | () |
| | - | () |

- / -

)

. (

/ - - - - - - - - - () ()

: ()

" : " :
 :
 . [...]
 . ()
 () ()
 :
 . :
 () :
 () :
 :
 - () < ... >
 -
 :

. ... - ()
 . - - ()
 - () / ()
 . - - ()
 . () - () ()

!

:

":

!

() :

"

"

":

:

:

: ():

:

:

: ()

:-

-

:

()

()

()

()

:

[]

()

):

:

):

- / - - : - / - - - - ()

/ - - - - - - - ()

. : ()

. - - ()

. - - ()

. () - () ()

. () (...

: ! :

. () ()

!

:

!

": []

]

"

[

[]

. ()

() ()

:

.

()

:

.

[]

[]

. () () :

() () :

| | | |
|-------|-------------|-----|
| | | |
| . () | / () - () | () |
| | . () - () | () |
| | - - | () |
| | . - - | () |
| . () | / () | () |
| | . () - () | () |

() ()
 . () []
 () ()

:

() ()
 []
 ()

[]

()

| | | |
|-------|-------|-----|
| . () | - () | () |
| . | - | () |
| . | - | () |
| . () | - () | () |
| . | - | () |

()

()

:

. () (

) :

. ()

!
()

:

()

:

() (

) :

!

:

.

.

()

[... ...]

() :

. () [...]

" :

| | | | | |
|-------|-------|---|---|-----|
| . | - | - | - | () |
| . () | - () | | | () |
| - | - | | | () |
| . | - | - | | () |
| . () | - () | | | () |
| . | - | - | - | () |
| . | | | | () |

:

»:

. () (

. ()

()

()

:

[]

:

() (

)

. ()

" :

"

:

. () (

)

:

() (

)

. () - () ()

. - - ()

. - - ()

. (-) - () ()

- - ()

. /

. () - () ()

. () - () ()

()

() () :

()

) :

() ()

()

-

[] " : [] []

()

()

()

" "

:

)

() ()

()
 ()
 ()
 ()
 ()
 ()
 ()
 ()
 ()

·
:

[]

·
()

()

()

:

·
:()

"

" :

:()

:

"

·
:()

·
" :

| | | | |
|---|---|---|-----|
| · | - | - | () |
| · | - | - | () |
| · | - | - | () |
| · | - | - | () |
| · | - | - | () |

. " : () .
 : () .
 : " " : .)
 : () ()) :
 : :
 " : " ! : " ! " ! " : " :) ()

| | | | | | | |
|---|-------|---|-----|---|---|-----|
| - | - | - | - | - | : | () |
| : | - | / | - | - | - | () |
| . | (-) | - | () | | | () |
| . | () | - | () | | | () |
| . | () | - | () | | | () |
| . | () | - | () | | | () |

:

.

" " "

()

()

()

:

)

: ()

(

:

!

!

()

:

()

)

: ()

: ()

() :

: .

-

() :

[]

- - ()

- - ()

()

- - - ()

. () - () ()

- - - ()

. - - - ()

() .

" " : [[]]

. ()
()

:

:
() ()

() ()

:

[) :

() ()

" "

| | | | | |
|----|---|------|------|-----|
| . | - | - | () | |
| . | - | - | () | |
| .(| - |) | -() | () |
| . | - | | () | |
| . | - | - | () | |
| .(|) | -() | () | |
| .(|) | -() | () | |

:

:

()

الخاتمة :

-"

:

-"

...

-"

-"

()

()

—"

—"

—"

—"

) () () () () () ()

. - - - - . -
 - - - - - . -
 . - - - - - . -
 : / - - - - - . -
 . - - - - - . -
 . - - - - - . -
 . - - - - - . -
 - - - - - . -
 - - - - - . -
 - - - - - . -
 - - - - - . -
 - - - - - . -
 . - - - - - . -
 . - - - - - . -
 . - - - - - . -
 / - - - - - . -
 - - - - - . -
 . - - - - - . -
 - - - - - . -
 - - - - - . -
 - - - - - . -
 - - - - - . -
 / - - - - - . -
 / - - - - - . -
 . - - - - - . -
 . - - - - - . -

- - - - - / - - -
 . / - - -
 / - - - - -
 . - - - - -
 . - - - - -
 / - - - - -
 . : - - -
 / - - - - -
 . : - - -
 - - - - - ()
 - - - - -
 : . - - - - -
 : - / - - - - -
 . : / - - - - -
 - . : - - -
 . - - - - -

:

. - () -
) : - - () -
 . (.
 : . - () -
 - - - -

Summary

In this research , we talk a bout a problem trying to explain and make it more simple , and at the end to make it satisfied and supported using what it's called (indicators) this problem are determined in a poet was charged with a thism in times and faith in some others during partly investigation to his poems.

He really gave the all people taken a group of research's made them and him very worried especially in " Al – Lozomiatt " .

He was " a Bu – alla almaarri " who forced the criticism to be diffrentiated in in grading his work , always there was aclear and regenerated will to study him, and his likrature which was processed by many sides is still appoint tosolve .

All his openions and morals were only current to the logic limits of mind which is the first of evry thing alife isn't a giants the law because the truth cannt be antitruth intre some time .

This effective by holly Quaran through involving and indications in the group of the first centuries then he referced an of a bove to a created poet using the morals of both Islam and Quaran AL – Marri was far of some of what in Islam come with his fast , sadness , lonless and breaking the hormal way of life and satirizing the society because – as he thought the community wasn't in a good polite beharion in many social sides .

We notice the effect of hally Quaran in away toclear the play of logic in is lamic code putting the mind a bove the law not to approve the law itself .

And we work an the poems with being in the deep of the one tical sides never the less it was necessary , so I talked a bout the linqual and phelo so phic article effects , then I talked a bout the effects of holly Quaran in forming the tradition wither ferring to the origin of meaning and poetry in general and at AL – Maarri in special .

This study was divided to introduction , three sections and Ends .

- ١- the first was far meaning and ideas in his poems beside the effect those formed by Quaran because it was a basic item in his education , because he explained much of the Islamic ideas through his immaterial vision which is represented in philosophic rules so they were an immaterial indicators to understand all thing .
- ٢- The second seetion is far talking a bout the language to search a bout the vocabulary at Al Maarri referring to his mentioning the names Quaran in his poems and afew names of chapters of holy koran like .(AL aataf)

(Yones) , (Braa') , (Al fateha) , (Al ekhlas) Besides he mentioned some vocabularies from Koran in its all various cases and refer to neighboring ones like (Paradise and Hell) and (Human and Demons) then he mentioned these subjective and its terms sometimes he delves on of ٦٠ th to make a case of suspense for the exploration . Then I talked about his poems in a scientific way clearing the linguistic styles and musical effect to the Koran words through the introductions of (suars) and (repeating) in the letters , words , and sentences and referred to the words by its power of voice .

- ٣- The third section was for his style presented by holy Koran by mentioning the favours of the views and his linguistic and moral idioms and all coming of embodied and imitations in his poems because of what the Koran gaveed him especially as him a poet and immaterial and I talked about the meaning of the linguistic idiom and the Mow it came in holy Qaran then about it which made his poems like a prose in a few times .

At the end I talked about some sticks from the (zager Al Nabeh) book which was inquired by " Dr . Amjed Trabulsi " containing some cutters of poetry which almarri depended him self among his beetles using Moly Koran indicated to his honest and his faith .

Then I named the results and list of the references and sources .

The End

الحمد لله رب العالمين